(८) अमृत से गगरी भरो...

अमृत से गगरी भरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे;
खुशी–खुशी मिल के चलो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥ टेक ॥

सब साथी मिल कलश सजाओ, मङ्गलकारी गीत सुनाओ;
मन में आनन्द भरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥ 1 ॥

इन्द्र–इन्द्राणी मिल हर्ष मनावें, प्रभु–चरणों में शीश झुकावें;
प्रभुजी की छवि निरखो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥ 2॥
सुवर्ण–कलश प्रभु उदकनि धारा, अङ्गे न्हावे जिनवर प्यारा;
स्वामी जगत को खरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥ 3॥
हे सुखकारी सब दुःखहारी, सेवा जिनकी प्यारी–प्यारी;
लेकर 'सरस' को चलो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे॥ 4॥